बच्चों के मानसिक विकास में परिवार का योगदान

विनिता गुप्ता

मानसिक अथवा बौद्धिक विकास से तात्पर्य बालक की उन सभी मानसिक योग्यताओं और क्षमताओं में वृद्धि और विकास से है जिसके परिणामस्वरूप वह अपने निरंतर बदलते हुए वातावरण में ठीक प्रकार से समायोजन करता है और बड़ी–बड़ी कठिन तथा उलझनपूर्ण समस्याओं को सुलझाने में अपनी मानसिक शक्तियों को पूरी तरह समर्थ पाता है। वास्तव में संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, स्मरण शक्ति, तर्क शक्ति, विचार शक्ति, निरीक्षण, परीक्षण और सामान्यीकरण शक्ति, बुद्धि और भाषा सम्बन्धी योग्यता, समस्या समाधान योग्यता और निर्णय लेने की शक्ति आदि सभी प्रकार की मानसिक और बौद्धिक शक्तियों, योग्यताएँ और क्षमताएँ हमारी मानसिक वृद्धि और विकास की प्रक्रिया द्वारा ही नियंत्रित होती हैं। ये सभी मानसिक शक्तियाँ अथवा योग्यताएँ एक दूसरे से बहुत सम्बन्धित हैं। इनमें से किसी का अपने आप में अकेले होना किसी दूसरे को प्रभावित किए हुए विकसित होना संभव नहीं है। इसलिए, जब भी किसी स्तर पर किसी बालक के मानसिक विकास की बात करते हैं तो उस समय हमारा ताप्तर्य इन सभी योग्यताओं, क्षमताओं और शक्तियों के समन्वित विकास से होता है।